Hours per week-05 hours
External-50 Internal-50
Max. Mark – 100

Need- The present course is most required in order to make the student aware of the works and studies related to **State Politics with Specialization Reference to U.P.**

Aims/Objectives- The aim and objective of incorporating this paper/course in the syllabi is to introduce the students to the area of **State Politics with Specialization Reference to U.P.**

Syllabus of M.A. Pol. Sc. IV Sem.

PAPER-III- STATE POLITICS WITH SPECIALIZATION REERENCE TO U.P.

1. State Politics- Meaning, Nature and Approaches
2. Inter-state relations
3. Structures and Processes- Legislature, Executive & Judiciary
4. Electoral Politics in UP
5. Peasant Movement
6. Pattern and Role of Bureaucracy
7. Democratic Decentralization – After 73^{rd} & 74^{th} Constitutional Amendments

Learning Outcome- After successful completion of this course the student shall understand comprehend and analyze various aspects and dimension of the **State Politics with Specialization Reference to U.P.**

Recommended Reading

1. Arora, Balveer & Verney, Multiple Identities in a single state; Indian Federalism in Comparative Perspective, Delhi Konark, 1995
2. Austin, Granville, Working, of a Democratic Constitution, New Delhi Oxford 2000
3. Kothari, Rajni, Politics in India, New Delhi Orient Longman, 1971
4. P.R. Brass, Language, Religion and Politics in North India London, Cambridge University Press, 1974
5. P. Chatterjee, States and Politics in India, Delhi Oxford University Press 1997
6. B. Dasgupta and W.H. Morris Jones, Pattern and Trends in Indian Politics.
7. B.L. Fadia, State Politics in India
8. S. Kaviraj, Politics in India, Delhi, Oxford University Delhi 1998
9. R. Kothari, Party System and Election Studies, Bombay, Asia Publishing House, 1967
10. I. Narain, State Politics in India, Meerut, Meenakshi Prakash, 1967
11. N.C. Sahni, Coalition Politics in India, Jullunder, New Academic Publishing Company 1971.
12. M.C. Setalvad, Union and State Relations under the India constitution, Calcutta Eastern Law House, Calcutta, 1975.
13. M. Shakir, State and Politics in Contemporary India, Delhi Ajanta

M.A. Political Science ①

IV Sem. Course III

State politics with special reference to U.P.

Code No— G- ~~307~~ 4072

(For on line study prepared by Dr. Madhu Bala Gupta)

<u>राज्यों की राजनीति का महत्व—</u>

भारतीय संविधान में ~~राज्यों की~~ राजनीति के संघात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत तीन स्तर हैं— ① राष्ट्रीय राजनीति ② राज्य राजनीति और ③ स्थानीय राजनीति। भारत की व्यवस्था में राज्य वे महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं जिनके द्वारा गाँव, कस्बे और शहर की राजनीति को राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के साथ जोड़ने का कार्य किया जाता है।

राज्य राजनीति राष्ट्रीय राजनीति के लिए प्रशिक्षण स्थल का भी कार्य करती है क्योंकि सामान्यतया राज्य राजनीति में सफल उतरने वाले व्यक्ति ही राष्ट्रीय राजनीति में स्थान पाते हैं। राज्य ही भारतीय राजनीति और लोकतन्त्र के प्रयोग स्थल हैं। अतः भारतीय लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए राज्य राष्ट्रीय राजनीति की आधारशिलाएं हैं।

<u>राज्यों की राजनीति के निर्धारक तत्व— (Determinants of State Politics)</u>

1. <u>संवैधानिक तत्व</u> — जैसे— राज्यपाल का पद, राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करना, राज्य को वित्तीय सहायता देना, आदि।

(2) राजनीतिक तत्व- जैसे-

A. केन्द्रीय नेतृत्व- मुख्य रूप से प्रधान मन्त्री का व्यक्तित्व।

B. मुख्य मन्त्री का व्यक्तित्व

C. केन्द्र और राज्यों में दलीय स्थिति

(3) साँस्कृतिक-सामाजिक तत्व-

(4) आर्थिक तत्व

(5) भौगोलिक तत्व

राज्यों की राजनीति के प्रमुख लक्षण- Salient features of State politics-

1. परम्परागत और आधुनिक तत्वों का समन्वय।
2. धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता आदि तत्वों का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव।
3. प्रतियोगी दलीय व्यवस्था।
4. शासन में तीव्र गुटबन्दी।
5. राज्य राजनीति का खण्डित स्वरूप।
6. राजनीतिक दल-बदल।
7. राजनीतिक अस्थिरता।
8. राज्य राजनीति को प्रभावित करने के लिए केन्द्र का अनुचित हस्तक्षेप।
9. राजनीतिक नेतृत्व में परिवर्तन।
10. भ्रष्टाचार में वृद्धि।

भारत में राज्यों की राजनीति की नवीन उभरती हुई प्रवृत्तियाँ-

1. आर्थिक विकास।
2. सुशासन की स्थापना एवं प्रशासनिक कुशलता।

3. द्विदलीय प्रणाली का विकास।
4. राज्यों में स्थायित्व की प्रवृत्ति का उभरना।
5. क्षेत्रीय दलों का महत्वपूर्ण होना।
6. केन्द्र का राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप की प्रवृत्ति पर नियन्त्रण।
7. नेतृत्व में परिवर्तन।
8. छोटे राज्यों के गठन की प्रवृत्ति।
9. आर्थिक उदारीकरण के कारण राज्यों के मध्य विषमताओं में वृद्धि होना।
10. पंचायती राज संस्थाओं को महत्व।
11. धर्म व साम्प्रदायिकता में वृद्धि।
12. क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति।
13. वोट-बैंक की राजनीति के कारण आपसी भेद में वृद्धि।
14. धरना, आन्दोलन, रैली व हिंसा की राजनीति

राज्यों की राजनीति विभिन्न कालों में समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही है। कुछ नवीन प्रवृत्तियाँ लोकतन्त्र की भावना के अनुकूल नहीं हैं। जनता को संकीर्णता की भावना से ऊपर उठना चाहिए तथा राजनीतिक दलों को शुद्ध भावना से देश की प्रगति के लिए काम करना चाहिए।

राज्यों की राजनीति का इतिहास एवं इसकी विस्तृत जानकारी के लिए निम्न किताबों का अध्ययन करें।

1. भारतीय शासन एवं राजनीति- डा० पुखराज जैन और डा० बी० एल फाड़िया
2. Politics in India by Dr. Rajni Kothari
3. भारतीय शासन एवं राजनीति- डा० एस० सी० सिंहल

विषय से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न

1. भारत में राज्यों की राजनीति से आप क्या समझते हैं? राज्यों की राजनीति को निर्धारित करने वाले तत्वों की विवेचना कीजिए।
2. राज्यों की राजनीति का विकास (विभिन्न चरणों) का उल्लेख कीजिए।
3. राज्यों की राजनीति के सामान्य लक्षण क्या हैं? इसकी वर्तमान नवीन प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

---

(38) भारतीय संविधान में नये राज्यों की स्थापना या प्रवेश का अधिकार किसे दिया गया है—
(A) राष्ट्रपति को (B) प्रधान मन्त्री को (C) संसद को ✓
(D) इनमें से किसी को नहीं।

(39) राज्यों के पुनर्गठन सम्बन्धी विधेयक को संसद में प्रस्तुत करने से पूर्व किसकी सहमति प्राप्त करना आवश्यक है—
(A) प्रधान मंत्री की (B) राष्ट्रपति की ✓ (C) सर्वोच्च न्यायालय की (D) इनमें से किसी की नहीं।

(40) अन्तर्राज्यीय जल विवादों से सम्बन्धित भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद है—
(A) अनुच्छेद 256 (B) 257 (C) 263 (D) 262 ✓।

(41) अन्तर्राज्यीय जल-विवाद निपटारा किस के अधिकार क्षेत्र में आता है—
(A) उच्च न्यायालय (B) सर्वोच्च न्यायालय (C) राज्य सरकार (D) केन्द्र ✓ सरकार।

(42)

(28) हिमाचल प्रदेश को किस सन में राज्य का दर्जा प्रदान किया गया—
(A) 1971 (B) 1972 (C) 1974 (D) 1976
(29) भारतीय संघ में कितने केन्द्रशासित प्रदेश हैं—
(A) 6 (B) 8 (C) 7 (D) 9
(30) 2000 में किस राज्य का निर्माण हुआ?
(A) उत्तराखण्ड (B) हिमाचल प्रदेश (C) मिजोरम (D) अरुणाचल प्रदेश
(31) भारत को संविधान में कहा गया है—
(A) परिसंघ (B) पूर्ण संघ (C) अर्द्ध संघ (D) राज्यों का संघ
(32) सरकारिया आयोग की नियुक्ति की गई थी—
(A) 1982 (B) 1983 (C) 1984 (D) 1985
(33) 'दल बदल और राज्यों की राजनीति' के लेखक हैं—
(A) एच० वी० पाटस्कर (B) डा० बाबुलाल फड़िया एवं श्रीपाल जैन (C) मोरिस जोन्स (D) डा० सुभाष कार्श्यप
(34) संविधान अन्तर्राज्यीय परिषद की स्थापना का अधिकार किसे देता है—
(A) संसद को (B) प्रधानमन्त्री को (C) राष्ट्रपति को
(D) मुख्य न्यायाधीश को।
(35) संविधान के किस अनुच्छेद में राष्ट्रपति को अन्तर्राज्यीय परिषद की स्थापना का अधिकार दिया गया है—
(A) अनुच्छेद 263 (B) 257 (C) 256 (D) 32।
(36) भारत 'राज्यों का संघ' होगा। यह संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया है—
(A) अनुच्छेद 1 (B) 2 (C) 3 (D) 4
(37) नये राज्यों की स्थापना या प्रवेश का प्रावधान भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद से सम्बन्धित है—
(A) अनु० 1 (B) 2 (C) 3 (D) 4

(D) उपरोक्त सभी।

⑩ सन् 1953 में भाषा के आधार पर किस राज्य का गठन किया गया?
(A) आन्ध्र प्रदेश (B) हरियाणा (C) कर्नाटक (D) तमिलनाडु

⑪ राज्य पुनर्गठन अधिनियम कब पास हुआ?
(A) ~~जुलाई~~ 1956 (B) 1960 (C) 1966 (D) 1968

⑫ नेहरू के जीवन काल में ही भारत ने राज्य आधारित क्षेत्रीय राजनीति में प्रवेश कर लिया था, उनकी मृत्यु ने इस प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान कर दी। यह कथन किस का है?
(A) मॉरिस जोन्स (B) इकबाल नारायण (C) मायरन वीनर (D) टिंकर।

⑬ नेहरू के अन्तिम दिनों में राजसत्ता केन्द्र से राज्यों की ओर उन्मुख हो गई थी।' यह कथन किसका है? (A) इकबाल नारायण (B) टिंकर, (C) मॉरिस जोन्स (D) जे० डी० सेठी।

⑭ State government in India के लेखक हैं-
(A) Rajni Kothari (B) मॉरिस जोन्स (C) श्रीराम महेश्वरी (D) इकबाल नारायण।

⑮ Politics in India के लेखक हैं-
(A) मॉरिस जोन्स (B) रजनी कोठारी (C) इकबाल नारायण (D) टिंकर।

⑯ भारतीय शासन और राजनीति के लेखक हैं-
(A) रजनी कोठारी (B) टिंकर, इकबाल नारायण (D) मॉरिस जोन्स।

⑰ राज्यों की राजनीति में जाति का प्रभाव किस रूप में देखा जा सकता है?
(A) प्रत्याशियों का चुनाव जाति के आधार पर होना
(B) जाति के आधार पर मतदान व्यवहार होना
(C) निर्णय प्रक्रिया में जाति की भूमिका होना
(D) उपर्युक्त सभी। ✓